रयत शिक्षण संस्था का

डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर (बुर्ली)

हिंदी विभाग

द्वि - दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय चर्चासत्र

(दि. 25, 26 नवम्बर] 2021)

''साहित्य में शोषितों और उपेक्षितों का चित्रण : गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता''

अहवाल

रयत शिक्षण संस्था का डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय रामानंदनगर (बुर्ली) तहसील - पलुस , जिला - सांगली, (महाराष्ट्र) की ओर से मराठी, हिंदी और अंग्रेजी के ''साहित्य में शोषित और उपेक्षितों का चित्रण : गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता'' इस विषय पर आयोजित द्वि - दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था । इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटक प्रधानाचार्य डॉ शिवलिंग मेणकुदळे जी, ऑडिटर रयत शिक्षण संस्था, सातारा, मुख्य अतिथि प्रो.तृप्ति करेकट्टी जी,अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, प्रो. डॉ श्रीपाद भट्ट जी, अधिष्ठाता फैकल्टी ऑफ लैंग्वेज एंड लिटरेचर, अंग्रेजी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, मा. भगवानदास मोरवाल जी, जेष्ठ हिंदी कथाकार, दिल्ली, मा. डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी, सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार दिल्ली, मा.डॉ. अर्जुन चौहान जी, प्रो. एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर,,मा. डॉ. दत्तात्रेय डांगे, मराठी विभाग, के.बी.पी. कॉलेज, पंढरपुर, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ एल .डी .कदम साहब तथा सलाहकार समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे ।

महाविद्यालय में मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा द्वारा" साहित्य में शोषित और उपेक्षितों का चित्रण: गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता" इस विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य यह रहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य में समाज के प्रत्येक घटक की अभिव्यक्ति रहती हैं । परंतु प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज में ऐसे कई घटक हैं, जो आज भी शोषित और उपेक्षित है । शोषित और उपेक्षित घटक के दुख, व्यथा, वेदना, कुंठा ,आक्रोश, संत्रास आदी को साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने रखने का प्रयास किया है।

"जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि" इस उक्ति के अनुसार समाज केकोने-कोने में झांकने का प्रयास लेखक द्वारा होता है । ऐसे समाज के कई उपेक्षित घटक किसान, मजदूर, नारी, दलित आदि की समस्याओं को सबके सामने रखकर उनकी समस्याओं को सुलझा ने की दृष्टि से कोशिश करने की आवश्यकता है और यह उद्देश सामने रखकर संगोष्ठी का आयोजन किया गया था ।

संगोष्ठी में 26 प्रपत्र वाचक तथा 157 प्रतिभागी उपस्थित थे ।

लाभार्थी संख्या -157

उपलब्धि -1. शोषित और उपेक्षित घटक के दुख, व्यथा, वेदना, कुंठा ,आक्रोश, संत्रास आदी को समाज के सामने रखने का प्रयास करना ।

2. साहित्य में चित्रित समाज के शोषित और उपेक्षित घटकों की अभिव्यक्ति करना ।

द्वि - दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय चर्चासत्र

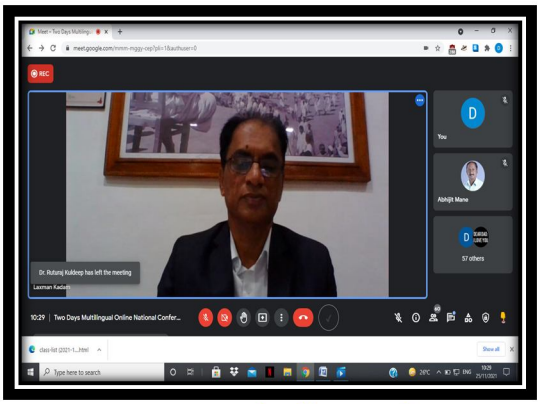

अध्यक्ष - प्रधानाचार्य डॉ एल .डी .कदम

उद्घाटक प्रधानाचार्य डॉ शिवलिंग मेणकुदळे

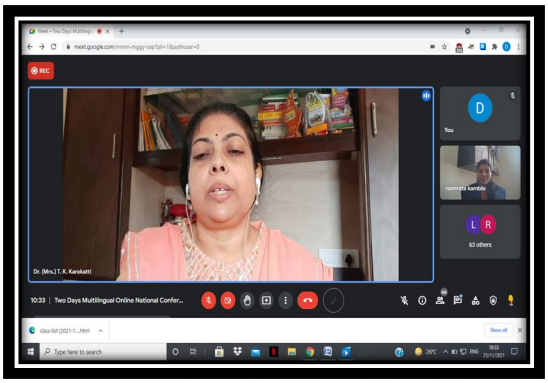

मुख्य अतिथि - प्रो.तृप्ति करेकट्टी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,

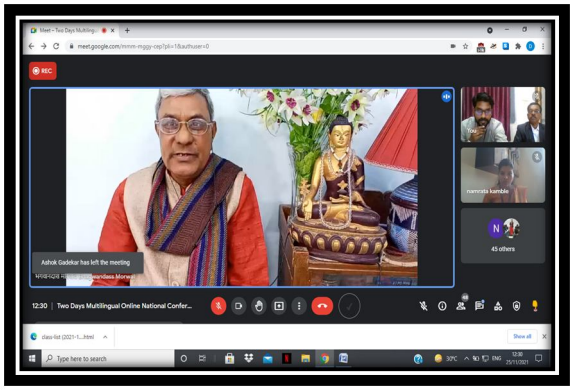

मा. भगवानदास मोरवाल जी,
जेष्ठ हिंदी कथाकार, दिल्ली

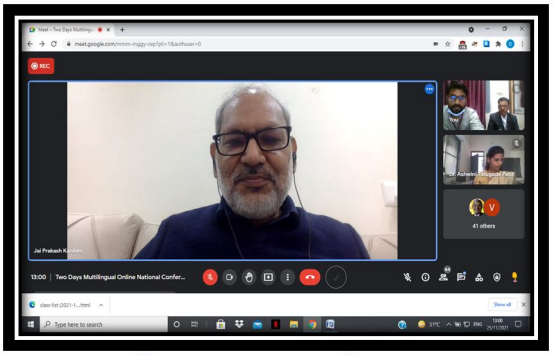

मा. डॉ. जयप्रकाश कर्दम मा.
सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, दिल्ली,

डॉ. अर्जुन चौहान
प्रोफेसर. एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर

अध्यक्ष
हिंदी विभाग

प्राचार्य
डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय,
रामानंदनगर (बुर्ली)